वार्तालाप – 410, हैदराबाद – 1 (आं.प्र.), ता – 1.10.07
Disc.CD-410, dated 1.10.07 at Hyderabad – 1 (Andhra Pradesh)

समय – 18.48
जिज्ञासू – बाबा, स्वर्णिम संगमयुग में यथा राजा तथा प्रजा कैसे होती है?
बाबा – ये बुद्धि की बात है। क्या? जब बुद्धि सतोप्रधान बनती है तो न दुःख लेती है और न दुःख देती है। दुःख की दुनियाँ रहती है या नहीं रहती है? दुःख की दुनियाँ तो रहती है; लेकिन आत्मा दुःख ग्रहण नहीं करती और दूसरों को दुःख देती भी नहीं है। उसके लिए मुनष्यों ने गीता में भी लिखा हुआ है, 'यस्मान् नो द्वीजते लोको, लोकान् नो द्वीजते च यः।' जो आत्मनिष्ठ बन जाता है, वो कोई से उद्वेग को प्राप्त नहीं होता। कोई उसको उत्तेजित करना चाहे तो उत्तेजित नहीं होता। और ऐसी कोई बात नहीं बोलता, ऐसा कोई कर्म भी नहीं करता जिससे कोई दूसरे को उत्तेजना पैदा हो जाए, विकृति पैदा हो जाए। दुःखी होना और सुखी होना, ये ऊपर–नीचे की स्टेज नहीं होती है। सदैव एकरस उसको कहते हैं आत्मनिष्ठ, स्वरूपनिष्ठ। स्वस्थिति में स्थित होने वाला। सम्पन्न स्टेज ऐसी है, जिसे कहते हैं जीवन मुक्त। जीवन भी है; लेकिन दुःख दर्दों से मुक्त है।

Time: 18.48
Student: Baba, how does the phrase "*yatha raja tatha praja"* (as the king so are the subjects) apply in the Golden Confluence Age (*swarnim sangamyug*)?
Baba: This is about the intellect. What? When the intellect becomes *satopradhan* (consisting mainly in the quality of goodness and purity) it neither takes sorrow nor gives sorrow. Does the world of sorrow remain or not? The world of sorrow does exist, but the soul does not take sorrow and it does not give sorrow to others either. For that the human beings have also written in the Gita, "*Yasman no dwijate loko, lokan no dwijate cha yah"* (meaning) the one who becomes soul conscious does not become agitated by anyone. Even if someone wants to excite him, he does not become excited. And he does not speak any such word, [he] does not perform any such action which agitates others or creates any disturbance either. He does not pass through the up and down stage of becoming sorrowful and becoming happy. The one who is always in a uniform stage is called *aatmanishth* (soul conscious), *swarupnishth* (one who is focussed on his form). The one who becomes constant in *swasthiti* (the stage of the self). The perfect stage is such that it is called (the stage of attaining) liberation in life. Life does exist, but it is free from sorrow and pain.

समय – 28.18
जिज्ञासू – पापों में पाप बढ़ाने का रहम करने के लिए बाप आया हुआ है। इसका अर्थ क्या है?
बाबा – बच्चे ज्यादा पापी और ज्यादा पुण्यात्मा बनते हैं, कि मनुष्य सृष्टि का जो पिता है वो सबसे जास्ती पापी और जबसे जास्ती पुण्यात्मा बनता है? कौन बनता है? बाप, बाप होता है और बच्चे, बच्चे होते हैं। बच्चे बच्चों जैसा काम करेंगे और बाप बाप जैसा काम करता है।

Time: 28.18
Student: The Father has come to show the mercy of increasing sins in the sins [being committed by the children]. What does it mean?
Baba: Do the children become more sinful souls and nobler souls or does the father of the human world become the most sinful and the noblest soul? Who becomes so? The father is [indeed] the father and children are [of course] children. Children will act like children and the father will act like a father.

तो दुनियाँ नीचे गिर रही है। बच्चे दुनियाँ को ज्यादा नीचे गिराने की ताकत रखते हैं या बाप ज्यादा नीचे गिराने की ताकत रखता है? पतित दुनियाँ कब पावन बनेगी? संपूर्ण पतित होने के बाद पावन बनेगी या अधूरी पतित होने के बाद पावन बनेगी? तो तुम तेजी से पतन के गर्त में नहीं ले जाए सकेंगे और बाप तेजी से पतन के गर्त में ले जाते हैं ताकि बच्चों को ज्यादा दुःख सहन न करना पड़े। नहीं तो विनाश में त्राहि–त्राहि करते रहेंगे लम्बे टाईम तक। इसलिए बाप पाप में पाप बढ़ाने का रहम करने आए हैं। बाप को रहम आता है, ये कब तक तड़पते रहेंगे।

So, the world is undergoing downfall. Do the children have power to cause more downfall of the world or does the father have more power to cause downfall? When will the sinful world become pure? Will it become pure after becoming completely sinful or will it become pure after becoming incompletely sinful? So, you will not be able to take it to the pit of downfall speedily and the father takes it to the pit of downfall speedily so that the children will not have to suffer more sorrow. Otherwise, they will keep calling for help repeatedly *(trahi-trahi)* for a longer time during (the period of) destruction. This is why the Father has come to show the mercy of increasing sins in the sins [being committed]. The Father feels pity (thinking) how long will they continue to suffer?

जैनियों में भी, जैसे हिंदुओं में चार युग माने जाते हैं, जैनियों में सृष्टि के छः आरें माने जाते हैं। जैनियों का एक कल्प होता है। जिसे कहते हैं सनत्कुमार कल्प। उनमें दिखाया है कि उनमें बहुत जास्ती दुःख भोगने की ताकत हैं और बहुत जास्ती सुख भी भोगने की ताकत हैं। ब्रह्मा ने सृष्टि रची और जो पहला–पहला धर्म स्थापन किया, तो किसके नाम पर धर्म स्थापन हुआ? सनत् कुमार, जो ब्रह्मा का बड़ा पुत्र है, पहला–पहला पुत्र। उसके नाम पर वो सनत् कुमार कल्प नाम दिया है। सनत्कुमार से सनातन धर्म बनता है। जैसे क्राईस्ट से क्रिश्चियन धर्म, शिव से शैव, विष्णु से वैष्णव। वो सृष्टि की बीजरूप आत्मा है, सबसे जास्ती पावरफुल है। जैसे नव ग्रहों में वृक्षपति, बृहस्पति सबसे बड़ा ग्रह है। सभी ग्रह इकट्ठे कर दिए जायें और बृहस्पति एक तरफ रखा जाए, तो ज्यादा वजन किसका होगा? बृहस्पति का ज्यादा वजन होगा।

Even among the Jains; just as Hindus believe there are four Ages, Jains believe there are six *Aareys* of the world. One *kalpa* among the six *Kalpas* (cycle) in the Jains is called *Sanatkumar Kalpa*. It has been shown in it that they (those belonging to the *Sanatkumar kalpa*) have the power to suffer excessive sorrow and the power to enjoy excessive happiness as well. Brahma created the world and the first religion that he established...., based on whose name was the religion established? Based on the name of *Sanat Kumar* who is the eldest son, the first son of Brahma, it has been named *Sanat Kumar Kalpa*. The name *Sanatan Dharma* (the Ancient Deity religion) is given on the basis of (the name) *SanatKumar*. For example, the Christian religion is named on the basis of Christ, *Shaiv* (community) is named on the basis of Shiv, *Vaishnavites* are named on the basis of Vishnu. He (Sanatkumar) is the seed-form soul of the world; he is the most powerful one. Just as *Vrikshapati, Brihaspati* (Jupiter) is the biggest planet among the nine planets. If all the planets (except Jupiter) were placed together and if *Brihaspati* (Jupiter) was put on one side, whose weight will be more? Jupiter's weight will be more.

समय – 34.12
बाबा – (कागज़ पर सवाल आया है।) शंकर द्वारा विनाश कहा जाता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना कही जाती है। विनाश का काम प्योरिटी से होता है या इम्प्योरिटी से? इम्प्योरिटी से होता है विनाश। और प्योरिटी से होती है स्थापना। जो शंकर द्वारा विनाश कहा जाता है, वो वास्तव में सम्पन्न के द्वारा विनाश होता है? जो सम्पन्न स्टेज होती है उसके द्वारा विनाश होता है या अधूरे के द्वारा विनाश होता है? (सबने कहा – अधूरे के द्वारा।) इसलिए शंकर कहा ही नहीं जाता अगर उसमें से अर्ध चंद्रमा निकाल दिया जाए । प्रजापिता को शंकर नहीं कहेंगे।

Time: 34.12
Baba: (A question has been asked on a piece of paper.) It is said that destruction takes place through Shankar. It is said that establishment takes place through Brahma. Does the task of destruction take place through purity or through impurity? Destruction takes place through impurity. And establishment takes place through purity. The destruction that is said to take place through Shankar, does it take place through the perfect form in reality? Does destruction take place through the perfect form or through an incomplete form? (Everyone said – through the incomplete form.) This is why, if the half-moon is removed from it, then he is not called Shankar at all. Prajapita will not be called Shankar.

प्रश्न आया है ब्रह्मा अधूरा रूप है, इसलिए शंकर के मस्तक में अधूरा चंद्रमा दिखाते हैं।
(जवाब–) अधूरा चंद्रमा मस्तक में दिखाते हैं, इस आधार पर शंकर है सिर्फ? चंद्रमाँ सिर्फ दिखाते है, चंद्रमाँ ने प्रवेश किया, इसलिए शंकर है या शिव भी प्रवेश हैं इसलिए शंकर है? ऐसे नहीं कि अधूरा चंद्रमाँ प्रवेश हैं तो शंकर है।
(प्रश्न–) जब तक शंकर में प्रवेश है अधूरा चंद्रमाँ तब तक शंकर पुरूषार्थी है। जब अर्ध चंद्रमाँ संपूर्ण बनेगा, शंकर में प्रवेश नहीं दिखाते है। (जवाब–) प्रवेश होता किसलिए है? उनको अपना शरीर तो रहा नहीं, तो किसलिए प्रवेश होता है? पढ़ाई पढ़ने के लिए प्रवेश होता है। पढ़ाई पूरी हो गई, तो स्कूल में बैठने की दरकार है? नहीं।

A question has been asked: Brahma is an incomplete form; this is why an incomplete Moon is shown on the forehead of Shankar.
(Answer -) Is he Shankar just because the half moon is shown on the forehead? Is he Shankar just because the moon is shown (on his forehead), the moon has entered him or is he Shankar because Shiv has also entered him? It is not that he is Shankar because the incomplete moon has entered him.
(Question -) As long as the incomplete moon remains in Shankar, he (i.e. Shankar) is a maker of special effort for the soul *(purusharthi)*. When the incomplete moon becomes complete, his entrance is not shown in Shankar.
(Question-) Why does he enter? He does not have his body; then why does he enter? He enters to study the knowledge. When the studies are over, is there the need to sit in the school? No.

(प्रश्न–) तो संपूर्ण चंद्रमा को शंकर में प्रवेश नहीं दिखाते। तो फिर शंकर का सम्पन्न रूप का चित्र कौनसा है?
(जवाब–) अरे शंकर तो सदैव ही सम्पन्न है। कभी अनिश्चय बुद्धि है क्या? नहीं। नाम जो पड़ता है वो शरीर के ऊपर पड़ता है या आत्मा के ऊपर नाम पड़ता है? शरीर के उपर नाम है। मूर्ति के उपर नाम है, अमूर्ति के ऊपर नाम नहीं है। अमूर्त के ऊपर, बिन्दी के उपर सिर्फ एक का ही नाम है, किसका? शिव का। मेरी बिन्दी का ही नाम शिव है, जो कभी बदलता नहीं। वो बिन्दी भी जब शरीर में प्रवश करती है, तो नाम बदल जाते हैं।

(Question-) So, the full moon is not shown to enter Shankar. So, which is the picture of the perfect form of Shankar?
(Answer-) Arey, Shankar is always perfect. Does he ever develop a doubtful intellect? No. Are the names given on the basis of the bodies or on the basis of the souls? The names are based on the bodies. The names are based on the personality (*moorty*) and not on the basis of the formless one (*amoorty*). The name of only "one" is based on the formless one, on the basis of the point (i.e.

soul), whose? Shiv's (name). The name of only my point is Shiv, which never changes. Even when that point enters a body, the names change.

तो पूछा है शंकर का भक्तिमार्ग में सम्पन्न रूप कौनसा दिखाते हैं?
(जवाब–) शंकर के दो रूप दिखाते हैं। एक दाढ़ी–मूँछ वाला। काला–काला भुजंग जैसा ऐसा चित्र बनाया है; मुरली में बोला है, शंकर का भक्तिमार्ग में ऐसा चित्र बनाया है जैसे रावण। फिर क्लीन शेव (बिना दाढ़ी–मूँछ के) भी दिखाया हैं। तो जो क्लीन शेव है वो ही संपूर्ण रूप है। और सन् 76 में बाप प्रत्यक्ष होते हैं। तो बच्चों के सामने प्रत्यक्ष होते हैं या दुनियाँ के सामने? नम्बरवार बच्चों के सामने प्रत्यक्ष होते हैं। अधूरा बाप है या संपूर्ण बाप है? अधूरा बाप! (सबने कहा – संपूर्ण बाप।) चंद्रमाँ अधूरा है; लेकिन शिवबाप तो सदैव पूरा ही है। शिव शंकर को मिलाकर एक तब किया जाता है जब बच्चा बाप समान स्टेज को धारण कर लेता है। तो बाप और बच्चे को भक्तिमार्ग में मिलाकर एक नाम दे दिया है। क्या नाम दिया है? शिव शंकर भोलेनाथ।

So, it has been asked, in the path of devotion *(bhaktimarg)*, which form of Shankar is shown to be perfect?
(Answer-) Two forms of Shankar are shown. One is with a beard and moustache. A picture like that of a black snake has been prepared. It has been said in the *murli* (for that picture), in the path of devotion Shankar's picture has been made like that of Ravan. Then, he is also shown as the clean shaved one. So, the one who is clean shaved is the perfect form. In addition, the Father is revealed in the year (19)76. So, is He revealed before the children or before the world? He is revealed in front of the children number wise. Is he the incomplete Father or the complete Father? Is he the incomplete Father? (Everyone said – the complete Father.) The moon is incomplete, but the Father Shiv is always complete. When the child attains the Father-like stage, Shiv and Shankar are combined together. So, the Father and the child have been combined together in the path of devotion and [they are] given one name. What name has been given? Shiv Shankar *Bholenath* (Shiv Shankar, the lord of the innocent ones).

समय – 53.40
बाबा – (कागज़ पर सवाल आया है।) प्रश्न है 2018 में संगमयुगी लक्ष्मी–नारायण के द्वारा कृष्ण जन्म लेते हैं।
(जवाब–) और जिसने ये प्रश्न किया है, उससे पूछा जाए कि सतयुगी कृष्ण जन्म लेते हैं या संगमयुगी कृष्ण जन्म लेते हैं? बताओ भई ! कौनसे कृष्ण की बात इसमें लिखी है?
जिज्ञासू – सतयुगी कृष्ण।
बाबा – संगमयुग में सतयुगी कृष्ण जन्म लेता है? अरे! संगमयुग जब तक रहेगा तब तक पतित दुनियाँ रहेगी या नहीं रहेगी?
जिज्ञासू – रहेगी।

Time: 53.40
Baba: (A question has been asked on piece of paper.) The question is , in 2018, Krishna takes birth through the Confluence Age Lakshmi-Narayan.
(Answer-) And if the person who has asked this question is asked whether the Golden Age Krishna takes birth or the Confluence Age Krishna takes birth? Tell, brother. Which Krishna has been mentioned in this (slip)?
Student: The Golden Age Krishna.
Baba: Does the Golden Age Krishna take birth in the Confluence Age? Arey! Until the Confluence Age continues, will the sinful world exist or not?

Student: It will exist.

बाबा – तो साकार में पावन शरीर कहाँ से आ जावेंगे? अरे! पतित दुनियाँ में एक भी पावन नहीं होता और पावन दुनियाँ में एक भी पतित नहीं होता। पांच तत्व 2018 में कोई के पावन हो जावेंगे या बुद्धि पावन हो जावेगी? बुद्धिमानों की बुद्धि है शिव बाप। तो वो बुद्धि को आके पावन बनाता है या प्रकृति के पांच तत्वों को पावन बनाता है? वो बुद्धि को पावन बनाता है ज्ञान से। और जिसमें प्रवेश करता है, वो पांच तत्वों वाला बाप है। कौन? प्रजापिता। तो जो पांच तत्वों वाला है, वो बुद्धियोग की पावर से जब अपने शरीर के पांच तत्वों को पावन बनावे तब पांच तत्वों से पावन बने सतोप्रधान शरीर वाले कृष्ण को जन्म देवेगा। और जब तक इस दुनियाँ में पांच तत्व तामोप्रधान हैं, तब तक राधा–कृष्ण जैसे सतोप्रधान बच्चों का जन्म नहीं हो सकता। तो ये प्रश्न तो गलत हो गया। जवाब देने वाला जवाब दे नहीं रहा है कि संगमयुगी कृष्ण की बात है या सतयुगी कृष्ण की बात है?

Baba: So, how will pure bodies appear in corporeal form? Arey! There is not a single pure person in the sinful world and there will not be a single sinful person in the pure world. Will the five elements of anyone become pure in 2018 or will the intellect become pure? The intellect of the intellectuals is the Father Shiv; so does He make the intellect pure when He comes or does He make the five elements of the nature pure? He makes the intellect pure through the knowledge. And the one whom He enters is the father made up of the five elements. Who? Prajapita. So, when the one who is made of five elements makes the five elements of his body pure through the power of the connection of intellect, he will give birth to the Krishna with a *satopradhan* body made up of pure five elements. And until the five elements of this world are *tamopradhan* (dominated by the quality of darkness or ignorance), *satopradhan* children like Radha and Krishna cannot take birth. So, this question is wrong. The person who is supposed to reply is not replying whether it is about the Confluence Age Krishna or the Golden Age Krishna?

जिज्ञासू – वो लोग समझते हैं कि सतयुगी कृष्ण जन्म लेगा।
बाबा – वो लोग माने कौन ?
जिज्ञासू – जिसने प्रश्न किया है।
बाबा – वो तो ब्रह्माकुमारियाँ समझती हैं, नेपाल में राधा–कृष्ण का जन्म होगा। अच्छा, कौन–कौन समझते हैं, हाथ उठाओ कि 2018 में संगमयुगी कृष्ण का जन्म होगा? या सतयुग के कृष्ण का जन्म होगा?
जिज्ञासू – जवाब तो आपने बोल दिया ना बाबा ।
बाबा – बोल दिया तो भी.....।

Student: Those people feel that the Golden Age Krishna will take birth.
Baba: What is meant by 'those people'?
Student: The one who has raised the question.
Baba: Those Brahmakumaris feel that Radha and Krishna will take birth in Nepal. OK, who all feel that the Confluence Age Krishna or Golden Age Krishna will take birth in 2018? Raise your hands.
Student: Baba, you have given the reply, haven't you?
Baba: Although it has been told …

……..……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.